Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(1), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

स्त्री सामर्थ्य का पाठ 'रमजानी का होटल'

डॉ. शेख अफरोज फ़ातेमा
हिंदी विभागाध्यक्षा,
मौलाना आजाद कॉलेज ऑफ आर्ट्स,
सायंस एंड कॉमर्स, औरंगाबाद
मो. 9423247784
ईमेल- skafrozfatema@gmail.com

हिंदी साहित्य में अनेक साहित्यकार हुए हैं जिन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से हिंदी साहित्य जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। ऐसे ही साहित्यकारों में एक नाम है मोहम्मद ताहिर का। बीसवीं शताब्दी के छठें दशक में हिंदी कहानी की दुनिया में कदम रखने वाले मोहम्मद ताहिर बहुत ही संजीदा कहानीकार है।

सन 1939 के जुलाई में जन्में ताहिर जी ने उच्च शिक्षा प्राप्त कर प्रशासनिक अधिकारी पद पर कार्य किया। सन 1956 में उत्तर प्रदेश सचिवालय में नौकरी आरंभ की और 1974 में सहायक बिक्री कर अधिकारी के पद पर आसीन हुए। ताहिर जी को साहित्य से लगाव रहा इसी वजह से उन्होंने नौकरी के दौरान ही साहित्य सेवा आरंभ की। उन्होंने कहानी लेखन में अपनी लेखनी चलाई। अवकाश प्राप्ति के पश्चात पूर्णता: कहानी लेखन को ही उन्होंने अपना समय समर्पित किया। अपने समय की सभी जानी-मानी पत्र पत्रिकाओं में ताहिर जी की कहानियां प्रकाशित हुई जिनमें - 'धर्मयुग', 'साक्षात्कार', 'निहारिका', 'कहानी' और 'सारिका' आदि पत्रिकाएं है। ताहिर जी ने अपने जीवन काल में 100 से भी अधिक कहानियाँ लिखी है। उनकी कुछ चर्चित कहानियों का अंग्रेजी और अन्य भाषा में अनुवाद हुआ है। साहित्य संगोष्ठियों से भी वह सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। अमीनाबाद की साहित्य केंद्र 'कंचना' में होने वाली नियमित बैठकों में भी वह हिस्सा लिया करते थे।

मोहम्मद ताहिर जी के दो कहानी संग्रह 'कवच' और 'एक उदास खुशी' नाम से प्रकाशित हुए हैं। इन दोनों संग्रह में 29 कहानियां समाविष्ट है। मोहम्मद ताहिर और उनकी कहानियों के ओर प्राय: हिंदी साहित्येतिहास लेखकों और आलोचकों का ध्यान नहीं गया है। "वीरेंद्र यादव, अब्दुल बिस्मिल्लाह जैसे कुछ एक साहित्यकारों ने ताहिर जी के लेखन के महत्व को समझा और उनके कहानी संग्रह पर अपनी टिप्पणी लिखी। इक्कीसवीं सदी के इस तीसरे दशक में पहली बार डॉक्टर फिरोज खान का ध्यान ताहिर जी के कहानियों के संकलन-संपादन एवं प्रकाशन की ओर गया और उन्होंने काफी मशक्कत और खोजबीन के बाद 99 कहानियां प्राप्त की तथा एक बृहदाकार कहानी-संग्रह प्रकाशनार्थ तैयार किया है, जिससे हिंदी कहानी के इतिहास में ताहिर की गंभीर उपस्थित रेखांकित होगी।"[1]

हिंदी साहित्य जगत में कई ऐसे साहित्यकार है जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से उत्कृष्ट रचनाओं को जन्म दिया है किंतु आज भी उनका साहित्य विविध पत्र-पत्रिकाओं

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(1), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

में और कुछ यत्र-तत्र बिखरा होने के कारण उनका यथा समय संकलन न होने के कारण उन साहित्यकारों की रचनाओं से पाठक महरूम रहे हैं। मोहम्मद ताहिर जी, "अपने समय के किसी कहानी-आंदोलन में शामिल नहीं हुए थे। उनके कथा लेखन पर उनके समय के कथा आंदोलन का प्रभाव नहीं पड़ा था। सामान्यता: अपने आस-पास की जिंदगी और अनुभव में रचे- बसे चित्रों को उन्होंने अपनी कहानियों का विषय बनाया है। मोहम्मद ताहिर अपने दौर की प्रगतिशील कथाधारा में शामिल हुए और तद्युगीन समाज की विद्रूपताओं, विसंगतियों और विडंबनाओं, राजनीतिक विकृतियों, धार्मिक पाखंड, आर्थिक वैषम्य आदि वाजिब सवालों के साथ ही आम आदमी के दैनिक जीवन-संघर्ष, पारिवारिक स्थिति, प्रेम-विवाह, तलाक, स्त्री-पुरुष संबंध आदि के वास्तविक चित्र अपनी कहानियों में दर्ज किया है। उन्हें मुस्लिम समाज की अंदरूनी सच्चाइयों और कमजोरीयों का गहरा अनुभव रहा है। इसलिए प्राय: उनकी कहानियां अपने ही समाज पर केंद्रित है। मुस्लिम पात्रों के जीवन सन्दर्भों से जुड़ी कहानियों में चित्रित हिंदू और मुसलमान पात्र अपनी-अपनी भूमिकाओं में अनेक सामाजिक समस्याओं के साथ प्रस्तुत हुए हैं। उनकी कहानियों की खासियत यह है कि वह सांप्रदायिक मुद्दे और विचार पर नहीं लिखी गई है। उनमें सांप्रदायिक सोंच की ना आंच है और ना ही तनाव। ताहिर की कहानी सांप्रदायिक सद्भाव के आरोपीत चिंतन से भी पूर्णतः मुक्त है।"[2]

मोहम्मद ताहिर ने अधिकतम कहानियां निम्न और निम्न- मध्यवर्गीय मुस्लिम जन-जीवन पर लिखी है। रोजमर्रा की जिंदगी जीने की जद्दोजहद में यह वर्ग चिंता मग्न रहता है। इन्हें दिन-दुनियां, मजहब, संप्रदाय, राजनीति आदि से कोई लेना देना नहीं रहता है। "रोज कमाना और खाना" यही उनके जीवन का उद्देश्य रहता है। उनका जीवन बड़ा ही सीधा-साधा होता है। कल की चिंता उन्हें नहीं होती क्योंकि कल किसने देखा है।

हमारे देश की आधी-आबादी कहे जाने वाली स्त्री भी इस जिंदगी जीने की जद्दोजहद में शामिल है। स्त्री के त्याग और समर्पण को समाज प्राय: कम आंकता है। जबकि महिलाएं परिवार के प्रति अपना दायित्व बखूबी निभाती है और अपना सर्वस्व न्योछावर करती है। वह पुरुष के साथ भी और उसके बाद भी अपने दायित्व निभाने से पीछे नहीं हटती। वह अतिप्रतिकूल परिस्थितियों में भी हार नहीं मानती। चाहे पुरुष उसका साथ दे या ना दे। वह अपने कर्तव्य से डगमगाती नहीं है। ऐसी एक संघर्षील महिला की कहानी है "रमजानी का होटल"।

'रमजानी का होटल' यह निम्न-वर्गीय एक परिवार की कहानी है। यह नायिका प्रधान कहानी है। कमरून इस कहानी का मुख्य पात्र है। कमरून हालत की मारी लड़की है। उसके पिता की मृत्यु के बाद उसकी माँ पर कमरून और उसकी तीन छोटी बहनों की जिम्मेदारी आती है। ऐसे हालातो में किस्मत का रोना लेकर बैठने से अच्छा जीने के लिए परिस्थितियों से संघर्ष करती है। वह छोटी उम्र में ही अपनी मां के साथ खड़े होकर अपने पिता का ढाबा 'रमजानी की होटल' को चलाने का निर्णय लेती है। अशरफ नाम के युवक ने 'गोपाल आयरन वर्क्स' के सेल्स-रिप्रेजेन्टेटिव का काम शुरू किया था तो पहली बार वह इस कस्बे में आया था। जब पहली बार उसने कमरून को देखा था वह उसकी और आकर्षित हो गया था। "देगचियों के बीच बैठी कमरून पर नजरें रुक गई थी। छरहरा बदन, साफ रंग, होठों पर पान की सूखी हुई लाली और चेहरा बेहद दयालू-सा।"[3] इसी आकर्षण में वह इस बेतरतीब-सी होटल नुमा ढाबे में आता है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(1), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

रामपाल जो अशरफ के आयरन वर्क्स का कस्टमर है वह उसे इस कमरून के संघर्ष और दृढ़ता का संघर्षशील सफर बयान करता है। वह कहता है, "मेरी भतीजी है यह।...सगी नहीं है, लेकिन मुझे चाचा कहती है। इज्जत से अपनी रोटी कपड़े भर का पैदा कर लेती है।... जब बारह साल की थी तो इसका बाप चल बसा था। तीन छोटी बहनें थी इसकी। बाप यह होटल चलाता था, उसके बाद मां-बेटी ने इसे संभाल लिया। रमजानी का होटल बहुत पुराना होटल है।... कमरून के दादा का नाम रमजानी था। उन्होंने ही इसे शुरू किया था। कमरुन के बाप के जमाने तक यहां टाट बिछा रहता था और मिट्टी के सकोरों में लोग जमीन पर बैठ खाना खाते थे। फिर बाप के मरने के बाद कमरून और उसकी मां ने धीरे-धीरे संभाला।"[4] इसी होटल पर जी तोड़ मेहनत कर उसने तीनों बहनों को पढ़ाया, दो की शादियां कर दी थी और तीसरी पास के ही सदर स्कूल में टीचर है। अपने परिवार को बनाए रखने में उसने अपने आप को मिटा दिया था। जिम्मेदारियों के बोझ तले वह बच्ची से बड़ी कब हुई उसे पता ही ना चला था।

अशरफ जब रामपाल जी से यह सब बातें सुन रहा था तब उसे लगा, "कमरून की परिस्थितियों भी उसकी परिस्थितियों से मिलती-जुलती है यह इत्तेफाक ही तो है, अशरफ ने सोचा। वह अभी तक दूसरों को सींचने-में, पनपाने में व्यस्त रहा था। अपनी तरफ देख भी नहीं पाया था।"[5] मैट्रिक पास हुआ ही था कि पिता चल बसे। मां पहले ही से नहीं थी। अशरफ से छोटे दो भाई और एक बहन और थी। बड़े भाई ने कुछ दिनों तक फर्स्ट ईयर की फीस दी बाद में हाथ खींचने लगे थे। भाई की शादी को साल भर ही हुआ था। उसने साफ महसूस किया था कि इतने लोगों का भार भाई के कमाई पर नहीं चल सकता। भाभी इसके लिए तैयार नहीं थी। इसीलिए उसने 'गोपाल आयरन वर्क्स' में सेल्समैन का काम करना शुरू कर दिया था। दिन-ब-दिन भाभी के व्यवहार में बढ़ती कटुता के कारण उसने अपने छोटे बहन-भाई के साथ अलग रहने लगा था।

जिंदगी संघर्षमय थी। आर्थिक चिंताएं, व्यस्तता, भाग-दौड़ जारी रही। दोनों भाई पढ़-लिख कर नौकरी करने लगे थे। छोटी बहन ने मैट्रिक पास की थी। तीनों भाइयों ने मिलकर बड़ी धूमधाम से उसकी शादी कर दी थी। इस बीच यह नवयुवक कब एक मजबूत वृक्ष में तब्दील हो गया था उसे पता ही ना चला था। जिंदगी के दौड़ धूप में कमरून और अशरफ दोनों ने अपनी जिंदगी अपने लिए जी ही नहीं थी। अपनी-अपनी जिम्मेदारियां के बोझ तले वह दब गए थे। कमरून ने तो फैसला कर लिया था कि वह शादी ही नहीं करेंगी। क्योंकि उसकी मां अकेली हो जाएगी। होटल का क्या होगा।

अशरफ का कमरून की तरफ बढ़ता आकर्षण देख जिम्मेदारियां से सराबोर कमरून ने उसे साफ शब्दों में कह दिया था कि वह कभी शादी ही नहीं करेंगी। वजह पूछने पर वह हंसकर कहती है, "मैं रमजानी का होटल यानी अपना होटल, किसी कीमत पर नहीं छोड़ सकती और शादी के बाद आप मुझे होटल छोड़ने के लिए जरूर कहेंगे।"[6] वह किसी कीमत पर यह होटल छोड़ने को तैयार न थी। उसके बुजुर्ग रिश्तेदारों ने खाते-पीते घरों में उसका रिश्ता तय करने की कोशिश की थी। नौकर रखकर अम्मा इस होटल को चला लेती पर उसका इस होटल से गहरा लगाव था। उसने इसी होटल के चलते तीनों बहनों को पढ़ाया-लिखाया, दो की शादी की। यह बात और है की बहन-बहेनोई अब इस घटिया-से होटल की मालकिन से कोई रिश्ता रखना, मिलना-जुलना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं।"[7] वह कहती है, अपने दादा के जमाने के इस होटल से ही मान लो उसने शादी कर ली है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(1), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

कमरून अपने निर्णय आप लेती है। कमरून ने बहुत छोटी-सी उम्र से ही जिंदगी को परखना और जीना सीखा था। जिंदगी के जद्दोजहद में छोटी उम्र में ही कई उतार-चढ़ाव देखे थे। इस कारण एक मासूम सी लड़की एक पुख्ता, सामर्थ्यशील, अभिमानी, दृढ़ संकल्पवाली महिला में तबदील हो चुकी थी। उसने आपसी रिश्तों को बहुत गहराई से रखा था। परिस्थितियों की आंच में तप कर सोना बन गई थी। वह किसी काल्पनिक जगत में जीना नहीं चाहती थी। यथार्थ की पुख्ता जमीन पर पैर रखकर खड़ी थी। आम लड़कियों जैसी उसके भी मन में शादी करने के, घर-बार, शौहर-बच्चों का अरमान था किंतु एक होटल चलाने वाली लड़की से कौन ब्याह करेगा? पहले सब हाँ में हामी भरेंगे और साल दो साल बाद यह होटल छोड़ने की जिद करेंगे और उसे यह भी पता था कि होटल के साथ उसे कोई भी अपनाएंगा नहीं। इसलिए उसने शादी का ही ख्याल दिमाग से निकाल दिया था। इसी होटल ने उसके परिवार को संभाला और संवारा था। यह होटल ही उसकी पहचान थी।

अशरफ के दिमाग में कुछ और ही चल रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि वह और कमरून एक ही सिक्के के दो पहलू है। दोनों नदी के दो किनारों जैसे है। दोनों जिम्मेदारियां के बोझ तले दबे हुए। अब तक की जिंदगी उन्होंने अपने परिवार के लिए जी थी। सब अपने-अपने रास्ते चले गए। अब दोनों बिल्कुल अकेले रह गए हैं जिंदगी में। कमरून ने तय कर लिया है कि वह होटल नहीं छोड़ेंगी पर अशरफ तो उसके पास आ सकता है।

अशरफ बोला, "कमरून अगर मैं तुम्हें होटल छोड़ने पर मजबूर ना करूं तो तैयार हो जाओंगी?"

"अभी नहीं तो साल दो साल बाद होटल छोड़ने को कहोंगे।" वह बड़े सहज भाव से बोली।

"कभी नहीं कहूंगा-वादा करता हूं। अशरफ बोला, "तुम्हारे साथ ही मैं भी होटल पर काम करूंगा।" .... "मैं सच्चे दिल से कह रहा हूं।"

अशरफ बोला, "तुम्हारी मां अब घर पर आराम करेंगी। हम दोनों होटल चलाएंगे। मैं नौकरी छोड़ दूंगा। फंड का कुछ रुपया मिलेगा। उससे होटल की कायापलट कर दूंगा। बाकायदा मेज-कुर्सियां होगी, चीनी के बर्तन होंगे। फर्श और छत पक्की होगी। काउंटर बनवाऊंगा। काउंटर पर तुम नहीं... मैं बैठूंगा और तुम उसी तरह देगचियों के बीच... ।"[8] अशरफ ने अपना फैसला कमरून को सुनाया था। जिसे सुन वह भी शर्मा गई थी।

अशरफ जानता है कि जिंदगी के भाग-दौड़ में एक अकेली बच्ची ने क्या कुछ नहीं सहा होंगा। उसने स्वाभिमानी स्त्री बनकर बाप- दादा का होटल चलाया और अपनी मां बहनों को एक इज्जत की जिंदगी दी है। कमरून एक सुलझी हुई लड़की है। ऐसी स्वाभिमानी, सामर्थ्याशील महिला उसकी बीवी बने इसलिए उसने कमरून को होटल छोड़ने के बजाय उसके साथ होटल चलाने की पहल की। अशरफ का यह कदम काबिले तारीफ है। वह स्त्री-पुरुष समानता और प्रगतिशील सोंच रखने वाला इंसान है। वह इस सोच को यथार्थ में उतारता है। उसकी यह पहल कमरून के चेहरे पर मुस्कान ले आती है क्योंकि अशरफ ही एक ऐसा इंसान है जो उसके काम की, उसके जज्बें की कद्र करता है। वह उसकी होटल को हीनता की नजरों से नहीं देखता बल्कि वह नौकरी छोड़ उसके साथ इस होटल में जुड़ना चाहता है। वह जिंदगी के सफर में कमरून से आगे या पीछे नहीं बल्कि उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहता है। हर सुख दु:ख में उसके साथ रहना चाहता है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:8(1), August, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

मोहम्मद ताहिर ने इस कहानी के माध्यम से परिस्थितियों से हार मानकर बैठने वाली स्त्री के बजाय एक संघर्षशील, रोजमर्रा की जिंदगी में जद्दोजहद करने वाली सामर्थ्याशील, स्वाभिमानी लड़की का चित्रण किया है। आधुनिक युग में हम आधी-आबादी कहे जाने वाले महिला वर्ग के कदम से कदम मिलाकर चलने वाले इस जज्बें को नजर अंदाज नहीं कर सकते। बारह साल की छोटी सी लड़की परिस्थितियों का रोना लेकर बैठी नहीं है और मां की ताकत बन होटल चलाने का निर्णय लेती है।

मोहम्मद ताहिर जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से जिंदगी का आईना दिखाया है। असल जिंदगी जो हम रोजमर्रा की जरूरत को पूरा करने की कशमकश में जीते हैं। उन जिंदगियों की कहानियों से रू-ब-रू कराने का काम किया है। साधारण से दिखने वाले निम्न वर्ग के लोगों की जिंदगीयां बहुत संघर्षमय होती है। ऊपरी तौर पर छोटी-छोटी दिखने वाली परेशानियां असल में इन लोगों के लिए पहाड़-सी होती है। अपने परिवारों को संभालने और संवारने के लिए यह लोग त्याग और बलिदान की दास्तानें रच देते हैं। परिस्थितियां प्रतिकूल होने पर भी हार नहीं मानते। जिंदगी की हर चुनौतियों का सामना करने का हौसला रखते हैं। ताहिर जी ने बड़ी ही सूक्ष्मता से निम्न वर्गीय लोगों की जिंदगी के चित्रों को उजागर किया है।

संदर्भ सूची :

1) (सं.)डॉ.एम.फिरोज अहमद, 99 कहानियां मोहम्मद ताहिर,विकास प्रकशन कानपूर,प्र.सं.2024 (आनंदप्रकाश त्रिपाठी - संघर्ष की आंच में तपी जिंदगी का बयांन) पृ.5 एवं 6
2) (सं.)डॉ.एम.फिरोज अहमद, 99 कहानियां मोहम्मद ताहिर,विकास प्रकशन कानपूर,प्र.सं.2024,पृ. पुस्तक के फ्लैप से
3) (सं.)डॉ.एम.फिरोज अहमद, 99 कहानियां मोहम्मद ताहिर,विकास प्रकशन कानपूर,प्र.सं.2024, (कहानी-रमजानी का होटल) पृ. 506
4) वही, पृ. 507
5) वही, पृ. 508
6) वही, पृ. 512
7) वही, पृ. 512
8) वही, पृ. 512